डा० मिथिलेश कुमार
संस्कृत विभाग
महाराजा कॉलेज, आरा

३. मेघदूत का विधा-निर्णय

खण्डकाव्यं भवेत्काव्यस्यैकदेशानुसारि च

—साहित्यदर्पण

मेघदूत में एक ओर जहाँ प्रबन्धात्मकता है, वहाँ गीति-काव्यात्मकता भी है। प्रबन्धकाव्य में, जिसमें घटनाओं का वर्णन, चरित का विश्लेषण, जीवन के विभिन्न पहलुओं का चित्रण रहता है, निश्चय ही वहाँ कवि की मनःस्थिति बहिर्मुखी होगी; और गीतिकाव्य में, जहाँ भावनाओं की संकुलता, अनुभूति की तीव्रता रहती है, वह स्वभावतः अन्तर्मुखी होगी। यों, अनुभूति, जो काव्य का गुण है, दोनों में रहती है। लेकिन पहले में वह रहती है और दूसरी में वह ही रहती है। प्रबन्धकाव्य का कवि अपने इष्ट को प्रकृति के विभिन्न रूपों, दृश्यों में अवतरित देखता है, विभिन्न घटनाओं के बीच रखकर उन्हें परखता है। वह अपने भावों और विचारों का विभिन्न वस्तुओं पर प्रक्षेपण करता है। उनके साथ, उनके भीतर अन्तर्भावन करता है। गीतिकार की अनुभूति रजनीगन्धा की वह मदशिथिल सुरभि है, जो आसपास की वीथियों में मादन, सम्मोहन भर देती है; प्रबन्धकार की अनुभूति चन्दन तरु का वह सौरभ है, जो वातावरण के साथ उसकी वनस्पतियों को भी आर-पार सुरभित कर दिग्दिगन्त में फैल जाता है। यही कारण है कि प्रबन्ध की प्रतिभा ने अचेतन मेघ को चेतन दूत बना दिया है। रामगिरि, देवगिरि, उज्जयिनी, शिप्रा, रेवा, कैलास, अलका, यक्ष, गन्धर्व, मेघ आदि के रूप-निरूपण में कवि की बहिर्मुखी प्रवृत्ति के दर्शन होते हैं; और गम्भीरा, निर्विन्ध्या, वेत्रवती आदि नदियों की प्रणयपिपासा एवं यक्ष की विरह-वेदना में उसकी अन्तर्मुखता क्रियाशील दीखती है। अब प्रश्न है कि मेघदूत क्या है? प्रबन्धकाव्य; गीतिकाव्य या दोनों है?

रसात्मक वाक्य काव्य माना जाता है; वह दृश्य और श्रव्य रूप में दो हो जाता है। दृश्य का सम्बन्ध शाकुन्तल आदि नाटक से है। श्रव्य काव्य का आनन्द पढ़ और सुनकर प्राप्त होता है। यह श्रव्य काव्य पद्य, गद्य और चम्पू में विभाजित हो जाता है। पद्यकाव्य के भी तीन भेद हो जाते हैं—महाकाव्य, खण्डकाव्य और मुक्तककाव्य। प्रबन्ध में महाकाव्य और खण्डकाव्य दोनों आ जाते हैं। जहाँ महाकाव्य बृहत् होता है वहाँ खण्डकाव्य अल्पकाय होता है। इसमें जीवन के किसी

एक पक्ष या एक वृत्ति, प्रणय, धर्म या नीति की चर्चा होती है। सम्पूर्ण जीवन-चित्रण नहीं होने के कारण इस प्रकार मेघदूत एक अमर खण्डकाव्य है। इसे हम गीतिकाव्य इसके गीतितत्त्व के आधार पर कहते हैं। आचार्य शिवबालक राय ने यह सिद्ध किया है कि मेघदूत में महाकाव्य और खण्डकाव्य दोनों का निर्वाह हुआ है; क्योंकि कवि ने इसमें आद्योपान्त कथासूत्र का निर्वाह किया है। दोनों का अन्तर यही है कि जहाँ महाकाव्य में जीवन के व्यापक सन्दर्भ को पात्रों और घटनाओं द्वारा उजागर किया जाता है वहाँ खण्डकाव्य में एक विशिष्ट मानवीय वृत्तिमूलक परिधि में भावात्मक चित्रण किया जाता है।

मेघदूत का नायक यक्ष है। वह देवकुल में उत्पन्न है और धीरललित नायक है। अलका की वियोगिनी यक्षप्रिया विरहविदग्धा नायिका है। इसका विरह शाप एवं प्रवास से उत्पन्न हुआ है। मेघदूत में विप्रलंभ शृंगार रस है। दूसरा पात्र मेघ भी उच्चकुल का है और त्रिभुवन-विदित व्यक्ति होने के साथ इन्द्र का प्रधान कार्यकर्त्ता है। काव्य दो भागों में विभाजित है—पूर्व और उत्तर मेघ। इसमें मन्दाक्रान्ता छन्द है, जो भाव-व्यंजना की दृष्टि से सर्वथा अनुकूल है। मेघदूत की घटनाएँ भी विविध एवं सरस हैं। यक्ष सन्देश-कथन की भूमिका में दक्षिण से उत्तर भारत के विभिन्न भू-भाग का चित्रोपम वर्णन करता है। दृश्यों की यहाँ कमी नहीं है। पुनः उषा, सन्ध्या, निशा आदि का भी मेघ दूत में हृदयहारी वर्णन है। यही नहीं, विश्व के प्रथम दूत काव्य—मेघदूत में यक्ष, यक्षप्रिया और मेघ मे शील का चित्रण भी है। अतः इसे खण्डकाव्य मानने में कोई आपत्ति नहीं है। दूसरी ओर यह धारणा भी विदग्ध समालोचकों की रही है कि मेघदूत के श्लोक जहाँ परस्पर संश्लिष्ट प्रतीत होते हैं वहीं वे सर्वथा स्वतन्त्र रूप से निबद्ध भी हैं। अन्तर्भावनाओं की निर्झरिणी के साथ इसमें प्रकृति के हर्षोल्लास और वियोगजन्य पीड़ा का मार्मिक चित्रण है। यहाँ हर्ष और विषाद दोनों तीव्र रूप में अजस्र धारा की रचना करते हैं। फलतः भावना की तरलता, द्रवणशीलता और एकात्मकता के कारण इसे गीतिकाव्य भी कहा जाता है। मेघदूत के पूर्व और उत्तर को दो दृश्य मानकर इसे दो दृश्यों का एकांकी भी कहा गया है। किन्तु अधिक संगत निष्कर्ष यही है कि यह विश्व का अमर प्रथम दूतकाव्य और खण्डकाव्य है।

'मेघदूत' को स्वच्छन्दतावादी (रोमांटिक) काव्य की श्रेणी में सर्वोपरि स्थान मिलना चाहिए। मेघदूत की सम्पूर्ण प्रकृति एक दिव्यचेतना से तरंगित हो रही है। मेघ, सरिता, पर्वत आदि का मानवीकरण कितनी सुगमता के साथ हुआ है! प्रकृति और मानव दोनों एक-दूसरे को अपने प्राण की छाया से आन्दोलित

करते रहते हैं। जगत् में कटु यथार्थ से दूर अलका इन्द्रधनुष की एक नगरी है। वहाँ प्रणय और सौन्दर्य की शाश्वत चन्द्रिका छिटकती रहती है। प्रकृति की सुषमा हृदय के प्रेमरस से सनकर मधुमालती की तरह महकती रहती है। मेघदूत के प्रत्येक पद में अनुभूति की निर्झरिणी पर कल्पना का इन्द्रधनुष खेल रहा है। अँग्रेजी रोमांटिक काव्य के बहुतेरे गुण मेघदूत में पहले से ही वर्तमान हैं। सुकोमल कीट्स और सुकुमार कालिदास को, यदि आप चाहें तो, एक पालने पर झुला सकते हैं।

★